بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَ نُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصار اللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
24
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्ब: जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 24 अप्रेल 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.
(शहादत महीने की तिथि ,1405 हश)

सच्चाई के हवाले से आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरते मुबारका का ईमान अफ़रोज़ तज़किरा।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 24.04.2026
محلہ احمدیہ قادیان پنجاب 143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशहद, तअव्वुज़ और सूर: फातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला, ने फ़रमाया: आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई के आला मेयार (उच्च-स्तर) के हवाले से आप सल. के उस्वा-ए-हसना (सुन्दर नैतिक आचरण) और मोमिनों को नसीहत व हिदायत का ज़िक्र गुज़श्ता ख़ुतबे में हो चुका था। इस सिलसिले में मज़ीद बयान करूँगा।

आप स. ने फ़रमाया: इंसान के झूठा होने के लिए यही निशानी काफ़ी है कि वो हर सुनी-सुनाई बात लोगों में बयान करता फिरे। अब देखें कि यह आदत आम तौर पर लोगों में होती है, जमाअत में भी बाज़ लोगों में बहुत ज़्यादा मौजूद है।

फिर एक रिवायत में आता है — हज़रत आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) को झूठ से बढ़कर कोई ख़स्लत (आदत) ज़्यादा नापसंद न थी। अगर कोई शख़्स नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सामने झूठ बोल देता तो वो बात आप स. के दिल में रहती। आप स.को पता होता कि झूठ बोला है और आप स.को इसका बड़ा दर्द होता, उसे महसूस करते और दिल में भी रखते थे — यहाँ तक कि आप स.को मालूम हो जाता कि उसने इससे तौबा कर ली है, इस्लाह कर ली है और झूठ बोलने से उसने मुकम्मल तौर पर एहतिराज़ शुरू कर दिया है।

एक रिवायत में आता है — हज़रत असमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से रिवायत है कि एक औरत नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास आई और अर्ज़ किया कि मेरी एक सौत है — क्या मुझ पर कोई गुनाह है कि मैं अपने ख़ाविंद के माल से ख़ूब सेर होने का इज़्हार करूँ कि मुझे मेरा ख़ाविंद बड़ा देता है, जो उसने मुझे नहीं दिया होता — सिर्फ़ उसे

चिढ़ाना चाहती हूँ, उसे तंग करना चाहती हूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जो शख़्स उस चीज़ से, जो उसे नहीं दी गई, सेर होने का इज़्हार करता है, वो ऐसा है जैसे झूठ के दो कपड़े पहनने वाला।

इसकी शरह (व्याख्या) में लिखा है कि कपड़े का लफ़्ज़ यहाँ बतौर मिसाल इस्तेमाल हुआ है। इसके माअनी यह हैं कि वो शख़्स झूठ और फ़रेब से काम लेने वाला है — उसने झूठ के दो कपड़े पहन रखे हैं, एक को ओढ़ा हुआ है और दूसरे को तहबंद(लुंगी) बनाया हुआ है।

नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: चार ख़स्लतें जिनमें हों वो पूरा मुनाफ़िक़ होता है, और जिसमें इन ख़स्लतों में से एक ही ख़स्लत हो, उसमें निफ़ाक़ की भी यह ख़स्लत होगी जब तक वो इसे छोड़ न दे। अगर उसके पास अमानत रखी जाए तो ख़ियानत करता है, और जब वो बात करता है तो झूठ बोलता है, और जब अहद करता है तो अहद-शिकनी करता है, और जब झगड़ता है तो गाली बकता है।

यह सारी बातें ऐसी हैं जो किसी न किसी तरह बराहे-रास्त या बिलवास्ता झूठ की तरफ़ ले जाने वाली हैं, या इनसे झूठ का इज़्हार होता है।

नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: जब कोई बंदा झूठ बोलता है तो फ़रिश्ता उससे एक मील दूर हो जाता है — उस बदबू की वजह से जो उसने पैदा की।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) एक मरतबा अनाज के एक ढेर के पास से गुज़रे। आप स.ने अपना हाथ उसके अंदर डाला तो आप स.की उँगलियों को नमी लगी। आप स.ने फ़रमाया: यह क्या मामला है, यह अंदर से गीली है? अनाज वाले ने कहा: या रसूलल्लाह! इस पर बारिश हो गई थी। आप स.ने फ़रमाया: तो तूने इसे अनाज के ऊपर क्यों न कर दिया? अगर इसमें बारिश हो गई थी तो ऊपर रखते ताकि लोग इसे देख सकते। आप स.ने फ़रमाया: जिसने धोखा दिया वो मुझसे नहीं है।

हुज़ूर फ़रमाते हैं: पस आज हम जो हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) को मानकर आँहज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर हक़ीक़ी ईमान लाने का एलान करते हैं, तो हमारे हर क़ौल और फ़ेल में सच्चाई का आला मेयार होना चाहिए, वरना आँहज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: अगर यह नहीं तो तुम मुझमें से नहीं हो, फिर मेरा कोई तअल्लुक़ नहीं तुमसे।

आप स.हमेशा सच बोलने और अमानत व दियानत में सबसे नुमायाँ होने की वजह से लोगों में "सादिक़" और "अमीन" मशहूर थे।

एक मुसन्निफ़ ने लिखा है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से क़बल — ज़माना-ए-जाहिलियत में — उनके पास उनसे पहले कोई डराने वाला नहीं आया, यानी क़ौम में कोई नबी नहीं आया था। लोग बुतों, मूर्तियों और तागूतों की इबादत करते थे और आप स.उन्हीं लोगों — यानी शैतान के गिरोह और बुत परस्तों — के दरमियान थे। आप स.ने कभी किसी बुत की तरफ़ रग़बत नहीं की, न कभी उन लोगों के साथ किसी दरबार में शरीक हुए। आप स.से कभी झूठ नहीं सुना गया। लोग आप स.को सदूक़, अमीन, बुर्दबार और निहायत मेहरबान समझते थे। एक रिवायत में आता है कि इस्लाम से क़बल ज़माना-ए-जाहिलियत में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से फ़ैसले करवाए जाते थे।

हज़रत मुसलह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने फ़रमाया कि आप स.के अख़लाक़-ए-हसना की उमूमी गवाही है जो आप स.की क़ौम ने दी। आप स.की नबुव्वत के दावे से पहले आप स.की क़ौम ने आप स.का नाम "अमीन" और "सिद्दीक़"

रखा। दुनिया में ऐसे लोग भी बहुत होते हैं जिन्हें किसी कड़ी आज़माइश में से गुज़रने का मौक़ा नहीं मिलता — हाँ! उमूमी आज़माइशों से गुज़रते हैं, लेकिन इसके बावजूद उनकी क़ौम उन्हें कोई ख़ास नाम नहीं देती। जैसे लड़ाई में शामिल होने वाला हर सिपाही जान को ख़तरे में डालता है, लेकिन क़ौम हर एक को विक्टोरिया क्रॉस नहीं देती, न जर्मन क़ौम हर एक को आयरन क्रॉस देती है। ऐसे ही किसी शख़्स को पूरी क़ौम का "अमीन" और "सिद्दीक़" का ख़िताब देना ग़ैर-मामूली बात है। पस अरब की सैकड़ों साल की तारीख़ में क़ौम का एक ही शख़्स को "अमीन" और "सिद्दीक़" का ख़िताब देना बताता है कि उसकी अमानत और उसका सिदक़ दोनों आला दर्जे के थे कि उनकी मिसाल अरबों के इल्म में किसी और शख़्स में नहीं पाई जाती थी। अरब अपनी बारीक-बीनी की वजह से दुनिया में मुमताज़ थे — पस जिस चीज़ को वो नादिर क़रार दें वो यक़ीनन दुनिया में नादिर ही समझी जाने के क़ाबिल है।

फ़रमाया: आँहज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सीरत बयान करते हुए हज़रत मुसलह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने एक जगह लिखा है कि रसूल करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपनी बीवी को इत्तिला देते हैं कि मुझ पर यूँ वही हुई है। बीवी यह नहीं कहती कि क्या झूठ बनाने लगे हो, बल्कि वो कहती है: आप घबराएँ नहीं, आपने जो कुछ देखा ठीक देखा — अल्लाह तआला आपको ज़ाया नहीं कर सकता, क्योंकि आप झूठ नहीं बोलते, नादार का बोझ उठाते हैं, खोई हुई नेकियों को क़ायम करते हैं, मेहमानों की मेहमाननवाज़ी करते हैं, सच्चाई और हक़ की मदद करते हैं। वो आप स.को अपने भाई वरक़ा इब्न नौफ़ल के पास ले जाती हैं। यह इसराईलियात के आलिम थे, तो वो सुनते ही कहते हैं कि इस वही में वैसे ही अहकाम और फ़रामीन पाए जाते हैं जैसे मूसा (अलैहिस्सलाम) की वही में थे।

घर में चचेरा भाई है जो जवान है और नौजवानों में तबलीग़ का अच्छा ज़रिया बन सकता है। वो भाई और भाभी की बातें सुनकर कहता है: मैं भी यक़ीन रखता हूँ कि आप स.सच्चे हैं और ज़रूर अल्लाह तआला ने आप स.से बातें की हैं।
फिर एक आज़ाद किया हुआ गुलाम है जो आप स.के अख़लाक़ का शिकार हो गया — माँ-बाप को छोड़कर आप स.के दरवाज़े पर बैठ गया। जब आहिस्ता-आहिस्ता होने वाली बातों को सुनता है और अपने आक़ा के चेहरे पर फ़िक्र व अंदेशे के आसार देखता है, तो आगे बढ़कर अपने आक़ा के दामन को थाम लेता है और कहता है: ऐ मेरे आक़ा! वही होगा जो आप स.ने देखा — जो आप स.ने कहा, जो देखा वो सच है। मुझे भी अपने साथ रहने दीजिए।

फिर एक गहरा दोस्त है — गोया एक ही सीप में पलने वाला दूसरा मोती। वो सुनता है कि उसके दोस्त ने बे-पर की उड़ानी शुरू कर दी है और शायद उसके दिमाग़ में ख़लल आ गया है। वो आकर कहता है: सिर्फ़ यह बताइए कि क्या बातें सच हैं? और आप स.की तसदीक़ करने पर कहता है: मेरे सच्चे दोस्त! मैं आप स.की रिसालत पर ईमान लाता हूँ।

अल्लाह तआला की तदबीर देखो! इस मुख़ालिफ़त के तूफ़ान के आने से पहले किस तरह आप स.के साथी पैदा कर दिए। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने दुआ माँगकर एक वज़ीर — बोझ उठाने के लिए — माँगा था, मगर मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अल्लाह तआला ने पाँच वज़ीर बिन माँगे ही दे दिए — और ऐसे वज़ीर जिन्होंने आप स.के बोझ बाँटने में कमाल कर दिया।

वरक़ा बेशक जल्दी फ़ौत हो गए, मगर एक न मिटने वाली गवाही आप स.की सिदाक़त पर दे गए। हज़रत ख़दीजा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने बारह साल तक औरत होकर वो काम करके दिखाया कि बहादुर से बहादुर मर्द की आँखें नीची होती हैं। ज़ैद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने बीस साल तक उसके बाद क़ुर्बानी का बेमिसाल नमूना दिखाया और आख़िर तलवारों की धाराओं के सामने अपना ख़ून बहाकर साबित कर दिया कि मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के वज़ीर कैसे

होने चाहिए। अबूबकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) और अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) तो आप स.की वफ़ात के बाद भी रहे और ख़लीफ़ा बनकर वज़ारत का एक नए रंग में सुबूत दे गए।

हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं: हमारे सैयद व मौला हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का ही सिदक़ व वफ़ा देखिए — आप स.ने हर एक क़िस्म की बद-तहरीक का मुक़ाबला किया, तरह-तरह के मसाइब व तकालीफ़ उठाए लेकिन परवाह न की। यही सिदक़ व वफ़ा था जिसकी बदौलत अल्लाह तआला ने फ़ज़्ल किया। इसीलिए तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया: اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا — अल्लाह तआला और उसके तमाम फ़रिश्ते रसूल पर दरूद भेजते हैं। ऐ ईमान वालो! तुम दरूद व सलाम भेजो नबी पर।

इस आयत से ज़ाहिर होता है कि रसूल अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आमाल ऐसे थे कि अल्लाह तआला ने उनकी तारीफ़ या औसाफ़ की तहदीद करने के लिए कोई लफ़्ज़ ख़ास न फ़रमाया। लफ़्ज़ तो मिल सकते थे लेकिन ख़ुद इस्तेमाल नहीं किए — यानी आप स.के आमाल-ए-सालिहा की तारीफ़ तहदीद से बैरून थी। इस क़िस्म की आयत किसी और नबी की शान में इस्तेमाल न की। आप स.की रूह में वो सिदक़ व सफ़ा था और आप स.के आमाल अल्लाह की नज़र में इस क़दर पसंदीदा थे कि अल्लाह तआला ने हमेशा के लिए यह हुक्म दिया कि आइंदा लोग शुक्रगुज़ारी के तौर पर दरूद भेजें।

उनकी हिम्मत व सिदक़ वो था कि अगर हम ऊपर या नीचे नज़र करें तो उसकी नज़ीर नहीं मिलती। हमारे मुक़द्दस नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने तो हज़ारों इंसानों को दुरुस्त किया जो हैवानों से बदतर थे — बाज़ माओं और बहनों में हैवानात की तरह फ़र्क़ न करते थे, यतीमों का माल खाते थे, मुर्दों का माल खाते थे, बाज़ सितारा-परस्त थे, बाज़ दहरिए थे, बाज़ अनासिर-परस्त थे। जज़ीरा-ए-अरब क्या था — एक मजमूआ था जो अपने अंदर मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब रखता था। इससे बड़ा फ़ायदा यह हुआ कि क़ुरआन करीम हर एक क़िस्म की तालीम अपने अंदर रखता है — हर एक ग़लत अक़ीदा या बुरी तालीम जो दुनिया में मुमकिन है, उसके इस्तीसाल (खत्म करने) के लिए काफ़ी तालीम उसमें मौजूद है। यह अल्लाह तआला की गहरी हिकमत व तसर्रुफ़ है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने उस ज़माने में भेजा जब जाहिलियत की इंतिहा हो चुकी थी और फिर उन जानवरों को इंसान बनाया।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अल्लाह तआला हमें आप स.के उस्वे पर चलते हुए सच्चाई के मेयारों को बुलंद तर करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ
اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब - 18001032131